इटली में आयोजित जी 8- जी 5 शिखर सम्मेलन में जाने से पहले प्रधानमंत्री का वक्तव्य

7 जुलाई, 2009

मैं आज जी 8 की इटालियन प्रेजिडेंसी द्वारा 9-10 जुलाई को ल-अकिला शहर की मेजबानी में आयोजित जी 8 और जी 5 देशों के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए इटली जा रहा हूँ । मैं जी 5 राष्ट्र समूह (ब्राजील, चीन, भारत मैक्सिको और दक्षिण अफ्रीका) के नेताओं की बैठक में भी शिरकत करूंगा । इस मौके पर हम विश्व के आर्थिक एवं वित्तीय संकट तथा विकास पर उसके प्रभाव, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सुधार से जुड़े प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर भारत के दृष्टिकोण को स्पष्ट कर पाएंगे ।

जी 8 से जुड़े घटनाक्रम में ही मैं व्यापारिक मामलों और जलवायु परिवर्तन पर प्रमुख आर्थिक फोरमों की बैठक तथा कई अफ्रीकी देशों की भागीदारी में इटली द्वारा खाद्य सुरक्षा विषय पर आयोजित की जा रही बैठक में भी भाग लूंगा ।

आज हम जिस वैश्विक वित्तीय और आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहे हैं वह भारत जैसे विकासशील देशों के विकास के लिए खासतौर पर नुकसानदेह साबित हुआ है । यह संकट हमारा बनाया हुआ नहीं हैं, इसके बावजूद भी हमें इसके परिणाम भुगतने होंगे । विकसित अर्थव्यवस्थाओं की मंदी ने हमारे निर्यात को प्रभावित किया है, संरक्षणवादी विचारों को बढ़ावा दिया है तथा ऋण एवं पूंजी प्रवाह पर असर डाला है । इसीलिए हम चाहते हैं कि व्यवस्थागत समस्याओं के समाधान के लिए वास्तविक अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के लिए सबकी सहमति से और समन्वित प्रयास किए जाएं । अंततः हम चाहते हैं कि विकसित विश्व के विकास पैटर्न में और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रशासन में उच्च स्तरीय स्थायित्व और निरन्तरता आए ।

खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के ये मुद्दे परस्पर गहराई से जुड़े हुए हैं । अगर हमें सतत विकास की अवधारणा को सार्थक बनाना है तो इन्हें एकल उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकारना होगा ।

जलवायु परिवर्तन एक महत्वपूर्ण विचारार्थ विषय रहेगा । जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा बुरा असर विकासशील देशों पर पड़ा है । आज पैदा हुए ये हालात पिछली दो शताब्दियों की औद्योगिक गतिविधियों तथा विकसित दुनिया की अतिउपभोगवादी जीवनशैलियों का नतीज़ा हैं । उन्हें यह ऐतिहासिक जिम्मेदारी स्वीकारनी ही होगी । भारत जलवायु परिवर्तन पर " यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन " तथा " बाली एक्शन प्लान " की रूपरेखा में जलवायु परिवर्तन पर होने वाली अंतरराष्ट्रीय बातचीत में सक्रिय रूप से भाग लेगा ।

इस दौरान मैं इटली, अंगोला, जर्मनी, जापान तथा यू.के. के नेताओं के साथ होने वाली द्विपक्षीय बैठकों में भाग लेने का भी बड़ी उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूँ ।

****